**समाजशास्त्र**

**बीए द्वितीय वर्ष**

**प्रथम प्रश्न पत्र: भारतीय समाज: मुद्दे एवं समस्याएं**

**विषय: सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार**

**डॉ वीरेंद्र सिंह यादव**

**समाजशास्त्र विभाग**

**रेफरेंस:**

**साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा**

**लेखक: प्रोफेसर एम एल गुप्ता**

 **विमलेश गुप्ता**

 **भ्रष्टाचार की अवधारणा**

भ्रष्टाचार शब्द का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थों में हुआ है। पुलिस एवं सरकारी अधिकारियों द्वारा घूस लेना, यौन अनाचार, व्यापारियों द्वारा कम तोलना, मिलावट करना, स्मगलिंग, कालाबाजारी, न्यायाधीशों द्वारा पैसा लेकर अपराधी को मुक्त कर देना, चुनाव में जीतने के लिए गड़बड़ियां करना, चंदे की रकम में गोलमाल करना, आदि सभी भ्रष्टाचार के अंतर्गत आते हैं। भ्रष्टाचार के स्थान पर अनुचित लाभ शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। भ्रष्टाचार निरोधक समिति,1964 के अनुसार, “शब्द के व्यापक अर्थ में एक सार्वजनिक पद अथवा जनजीवन में उपलब्ध एक विशेष स्थिति के साथ संलग्न शक्ति तथा प्रभाव का अनुचित या स्वार्थ पूर्ण प्रयोग भ्रष्टाचार है”।

इलियट व मैरिल के अनुसार, “ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्ति हेतु जानबूझकर निश्चित कर्तव्य का पालन ना करना ही भ्रष्टाचार है”।

 **भ्रष्टाचार के कारण**

1. राजनीतिक इकाइयों का बड़ा आकार
2. प्रजातंत्रात्मक शासन व्यवस्था के दोष
3. व्यापार एवं राजनीति में निकट संबंध
4. सरकारी कार्यों का विस्तृत क्षेत्र
5. सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन
6. मुद्रा अर्थव्यवस्था
7. भ्रष्टाचार उन्मूलन के कारगर तरीकों का अभाव
8. विकास के असमान अवसर
9. निर्धनता
10. चारित्रिक एवं नैतिक पतन
11. प्रशासकीय कठिनाइयां
12. पूंजी संग्रह की प्रवृत्ति
13. शिक्षा का अभाव
14. बेकारी
15. कानून की अनभिज्ञता
16. अपर्याप्त वेतन
17. अत्यधिक प्रतिस्पर्धा
18. आबादी की भिन्नता
19. भ्रष्टाचार पनपाने में उच्चाधिकारियों का सहयोग